P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बी.एड. प्रशिक्षकों की भूगोल शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन

कुसुम कान्ति कुजूर
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय,
छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत

अनिता सिंह
शोध निर्देशिका,
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय,
छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में बी.एड. प्रशिक्षकों द्वारा भूगोल विषय को पढ़ाने हेतु प्रयोग किये जाने वाली शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता देखना है। भूगोल विषय को पढ़ाने के लिये सबसे अधिक प्रभावशाली विधि जानना है ताकि भूगोल विषय के प्रशिक्षक एवं शिक्षक विषय वस्तु के अनुसार सही शिक्षण विधियों का चयन कर शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें। आंकड़ो के संकलन के लिए स्वनिर्मित मापनी का उपयोग किया गया। सांख्यिकी गणना हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं t परीक्षण का प्रयोग किया गया।

मुख्य शब्द : शिक्षण विधि, प्रभावशीलता।

प्रस्तावना

भूगोल मानव ज्ञान की मुख्य शाखा है। आज का भूगोल हजारों वर्षों से संचित ज्ञान का परिणाम है। भूगोल में पृथ्वी की संरचनाओं का अध्ययन किया जाता है और विशेषतः उनके पारस्परिक संबंध का विश्लेषण रहता है। भूगोल भौगोलिक तत्वों की वास्तविक स्थिति, विस्तार, संबंध और मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट करता है।

मनुष्य प्राचीनकाल से ही पृथ्वी की प्राकृतिक दशा, आकृति और उसके विस्तार के विषय में अध्ययन करता रहा है। पृथ्वी के सुदूर क्षेत्र में रहने वाले निवासियों के निवास, भोजन, कपड़ा, रहन–सहन, रीति–रिवाज तथा जीवन संबंधी जानकारी प्राप्त करने की अभिलाषा प्राचीन समय से ही मानव स्वभाव का विशेष गुण रहा है।

वर्तमान समय में भूगोल के अध्ययन की अत्यंत आवश्यकता है जिसमें वैज्ञानिक ढंग तो अवश्य हो, पर वास्तव में उसमें मानवीय पक्ष की सुंदर सामंजस्य हो और मनुष्य को गौरवपूर्ण स्थान दिया गया हो। वर्तमान समय में भूगोलवेत्ताओं का यह दृढ़ विश्वास है कि विद्यालयीन पाठ्यक्रम में भूगोल ही एक ऐसा विषय है जो बालकों में कौतूहल, देशवासियों में सौहार्द्र, सद्भावना और सहानुभूति बढ़ाता है। इसी विषय द्वारा हम उन्नत एवं पिछड़े देशों के अनुकूल व प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उनके भोजन, वस्त्र, निवास स्थान, रहन–सहन, विचारधारा तथा सामाजिक प्रथाओं को अच्छे से समझ सकते हैं। इसमें निश्चय ही हमारे हृदय में उनके लिए सहानुभूति की भावना उत्पन्न होती है। भूगोल में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राजनैतिक विभाजनों के बावजूद मनुष्य अपने आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों में उत्तरोत्तर व परस्पर निर्भर होते जा रहे हैं।

चूंकि शिक्षण का उद्देश्य और शिक्षण विधि का घनिष्ट संबंध होता है। शैक्षिक उद्देश्यों के आधार पर ही शिक्षण विधि का चयन किया जाता है। किन उद्देश्यों की प्राप्ति किस शिक्षण विधि से की जा सकती है, यह अध्यापक तय करता है। अतः यहां भूगोल शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा करना भी आवश्यक है। भूगोल शिक्षण के उद्देश्य निम्नांकित हैं –

1. छात्रों को स्वतंत्र रूप से सोचने, तर्क करने, कार्यकरण संबंध स्थापित कर सकने हेतु प्रेरित करना।
2. विद्यार्थियों को ऐसे व्यवसायों के लिए तैयार करना जिसमें भूगोल के ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है।
3. अवकाश के समय भूगोल की पुस्तक पढ़ना, यात्रा एवं पर्यटन में लगाना और सुखमय जीवन बिताना।
4. अंतर्राष्ट्रीय प्रेम और सद्भावना का संचार करना।

भूगोल अध्यापन की विधियां

शिक्षण विधि वह साधन, माध्यम व हथियार है जिसे शिक्षक अध्यापन के दौरान उपयोग करता है और अपने शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करता है। कोई एक विधि एक शिक्षक के लिए उपयुक्त हो सकता है जबकि दूसरे के लिए अनुपयुक्त। भूगोल विषय के शिक्षण हेतु विभिन्न विधियों को जानना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार किसी भी शिक्षण विधि का चयन कर सफलतम अध्यापन कार्य किया जा सकता है। भूगोल शिक्षण हेतु प्रमुख विधियां निम्नांकित हैं –

1. प्रदर्शन विधि, 2. योजना विधि, 3. भ्रमण विधि, 4. आगमन विधि, 5. निगमन विधि एवं 6. निरीक्षण विधि।

प्रस्तुत अध्ययन में आगमन विधि एवं निगमन विधि की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

साहित्यावलोकन

बीरकर, पी.सी. (1980) ने अपने अध्ययन ''ए स्टडी ऑफ फ्यू इफैक्ट इन्टीग्रेटेड एप्रोच ऑफ द टीचिंग, सोशल स्टडीज इन द परफारमेंस ऑफ फोर्थ स्टैण्डर्ड प्रायमरी स्कूल'' में पाया कि एकीकृत विधि पारम्परिक शिक्षण विधि से ज्यादा प्रभावशाली है।

शेख, रेहाना (1985) ने अपने अध्ययन सामाजिक विज्ञान शिक्षण में व्याख्यान, विचार विमर्श विधि तथा सामाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि बालकों के हित में संयुक्त राष्ट्र संघ इकाई के अध्यापन हेतु सामाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का प्रयोग अधिक उपयुक्त होगा।

गंगोपाध्याय (1991) ने ''एन एक्सपेरीमेंटल स्टडी ऑफ द इफैक्टनेस ऑफ क्लास रूम टीचिंग टेक्नीक्स इन रिलेशन टू द स्टुडेन्ट्स एचीवमेंट'' का अध्ययन कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों पर किया था। व्याख्यान सहित व्याख्या, प्रश्नोत्तर शिक्षण प्रविधियों के प्रयोग तथा पृष्ठपोषण से संबंधित था। परिणाम पाया गया कि व्याख्यान सह–व्याख्या की अपेक्षा व्याख्यान सह–प्रश्नोत्तर प्रविधि के साथ ज्यादा प्रभावी हुई। व्याख्यान व व्याख्या के साथ केवल ज्ञान व अवबोध उद्देश्य की प्राप्ति हुई।

बाली, अनिता (2010) ने ''भूगोल विषय के अध्यापन संदर्भ में साहचर्य अधिगम की सार्थकता एवं उसका छात्रों की अवधारणा पर प्रभाव का अध्ययन'' में पाया कि परम्परागत विधि और साहचर्य विधि द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिण उपलब्धि के बीच सार्थक अंतर पाया गया।

उपर्युक्त साहित्यों के पुनरावलोकन से स्पष्ट है कि परम्परागत शिक्षण विधि की अपेक्षा आधुनिक शिक्षण विधियां विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में अधिक प्रभावशाली हैं।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षार्थियों के उपलब्धि स्तर को उच्च बनाने के लिये शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को भी नवीन शिक्षण विधियों से परिचित होना अनिवार्य है। अतः नवीन शिक्षण विधियों के प्रयोग की आवश्यकता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। ये शिक्षण विधियां शिक्षार्थियों की बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ उनकी मानसिक योग्यता जैसे चिंतन शक्ति, क्रियाशीलता, तर्क शक्ति, कल्पना शक्ति आदि को सकारात्मक रूप प्रदान करती है। इसी उद्देश्य से अध्ययन विषयों की प्रकृति के अनुसार शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

आगमन एवं निगमन विधि की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

परिकल्पना

आगमन एवं निगमन विधि की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में भूगोल प्रशिक्षकों की शिक्षण विधि की प्रभावशीलता जानने के लिये प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में दो बी.एड. महाविद्यालय के कुल 60 भूगोल विषय के प्रशिक्षार्थियों को सोद्देश्य पूर्ण न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

शोध उपकरण

शोधार्थी द्वारा निर्मित भूगोल उपलब्धि परीक्षण की सहायता से बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की भूगोल विषय में उपलब्धि के आधार पर शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का मापन किया गया।

तलिका क्र. 01

समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
प्रायोगिक समूह (आगमन विधि द्वारा शिक्षण)	66.066	7.212	1.93
नियंत्रित समूह (निगमन विधि द्वारा शिक्षण)	62	9.06	

.05 स्तर पर t का मान 2.00 है। गणना द्वारा प्राप्त t का मान 1.93 t के निश्चित मान 2.00 से कम है। परिकल्पना को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता है। अतः परिकल्पना–आगमन एवं निगमन विधि की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा, स्वीकृत होता है। चूँकि निगमन विधि आगमन विधि की परिपूरक है तथा एक दूसरे पर आधारित होते है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों विधियों की प्रभावशीलता लगभग समान है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध विषय ''बी.एड. प्रशिक्षकों की भूगोल शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन'' में संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह पाया गया कि आगमन विधि निगमन विधि की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। किन्तु दोनों विधियों के प्रभाव में कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, हरपाल (2005), भूगोल शिक्षण, राधा प्रकाशन, आगरा .

पाठक, पी.डी. (2012), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद प्रकाशन, आगरा.

बाली, अनिता (2010), भूगोल विषय के अध्यापन संदर्भ में साहचर्य अधिगम की सार्थकता एवं उसका छात्रों की अवधारणा पर प्रभाव का अध्ययन, राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्, शंकर नगर, रायपुर.

कपिल, डॉ. एच. के. (2009) अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), राखी प्रकाशन, आगरा, उ.प्र., भारत।

शर्मा, डॉ. आर. ए. (2007) सामाजिक विज्ञान शिक्षण, विनय रखेजा, मेरठ, उ.प्र., भारत।

श्रीवास्तव. डॉ. डी.एन. वर्मा, डॉ. प्रीती (2008) मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, उ.प्र., भारत।